SPEECH OF HIS EXCELLENCY, SHRI VIREN J. SHAH, THE GOVERNOR OF WEST BENGAL, AT THE INAUGURATION OF 150TH FOUNDATION DAY OF BIRBHUM ZILLA SCHOOL ON 9TH DECEMBER, 2000.

यहाँ मंच पर विराजमान ऑफिसर लोग अतिथिओं, विशिष्ट व्यक्तिगण और हैड मास्टर सा०

पहले तो मैं आपसे माफी मांगना चाहता हूँ कि आप दस बजे से यहां आये हुए थे और मैं समय पर पहुंचा नहीं। ऐसा कभी कलकत्ता में या और कहीं होता नहीं है कि गवर्नर सा० अगर ९:५५ या दस बजकर एक मिनट पर पहुंचने वाले थे दस बज कर एक मिनट पर पहुंचते है। लेकिन वे हेलिकॉप्टर से आये हवाई जहाज से और आकाश स्वच्छ नही था इसलिये वहां से चला नहीं। सारा हमारा कार्यक्रम बदलता गया और जिससे आपको तकलीफ हुई। अब दोपहर बाद हम इंजीनियरिग कॉलेज के लिये जाने वाले हैं और हमने इसका प्रायश्चित किया है। हमने प्रायश्चित ये किया कि हम आज भोजन नहीं खायेंगे। No lunch for me और No lunch for me means no lunch for people who are with me. मेरे साथ जो आये हैं उनका भी भोजन नहीं होगा क्योंकि समय की कमी है। हमें आज दोपहर को ही वापस जाना पड़ेगा। मैं यहां रहने वाला था। रात को ही मेरी आदत के हिसाब से Distt. के सब अफसरों से मिलना था। फिर जनता के लोगो से मिलना था। इसके लिये मुझे वापस आना पड़ेगा यहां। आऊंगा खुशी से पूरा दिन यहां गुजारूंगा लोगो से मिलने के लिये। (- - - - तालियां) अभी यहा बच्चों को बड़ा मजा आता है। समझते हैं या नही समझते हैं भई मजा तो आता है न ताली बजाने में। ठीक बात है न!!! लेकिन आपको मालुम है ये समारोह क्यों हुआ है? आप ऐसे विद्यालय के बच्चे हैं जो विद्यालय एक ऐतिहासिक उसका स्वरूप हुआ है - मैं पूछ रहा था कि बंगाल एक था तब इस जमाने के बाद १५० वर्ष हुए जब इसकी स्थापना हुई और बीरभूम में हुई तो पहले ऐसे विद्यालय थे। और वो जमाना, वो जो समय था जिसको बेंगाल का रिनेसांस एक इस तरह की क्रांति परिवर्त्तन शुरू हुआ था – सांस्कृतिक, सामाजिक शिक्षा के क्षेत्र में और राजकीय क्षेत्र में भी हो आया है – उस जमाने से थे विद्यालय शुरू हुआ है। और इस विद्यालय से ऐसे बच्चे पैदा हुए जैसा आपने सुना हिन्दुस्तान का पहला ब्रिटिश House of Lords का member, Lord Sinha जो गवर्नर भी बने थे – पहले हिन्दुस्तानी - वे इस विद्यालय में शिक्षा पाये हुए थे। बड़े चीफ जस्टिस, हाईकोर्ट के मुख्य न्यायधीश, और न्यायधीश, ICS Officers, IAS Officers, IPS Officers, विज्ञानी, बड़े-बड़े डॉक्टर, साहित्यकार संस्कृत के विद्वान, और विद्वान जैसे इस विद्यालय से आये हैं। इसलिये आप लोगों की जिम्मेदारी बढ़ती है और मैंने headmaster साहब से कहा कि आपकी और आपके शिक्षकों की जिम्मेदारी

बढ़ती है। क्योकि जब सरकारी स्टाफ से सरकारी विद्यालय बन जाते है तो कई वकत जिसको अंग्रेजी में indifferene कहते है, लापरवाही - समय पर आये, गये और कई जगह मैं देख रहा हूँ ये कि महिने के आखीर मे पगार मिल गया तो अपना काम हो गया। मानता हूँ कि यहां ऐसा नहीं होता होगा। मैंने Headmaster साहब से प्रार्थना की, निवेदन किया कि आपके शिक्षकों की ऐसी विरासत उनके पास है कि जिससे उनको ये करना है कि पिछले १०० साल में, १५० बरस में, एक सौ साल में, ५० साल पहले भी ऐसे-ऐसे विद्यार्थी निकले जो जीवन के विविध क्षेत्रो में बड़े अच्छे स्थान पर पहुंचे। हर बच्चा जो आज है, आप हरेक उसके लायक हो, आपका अधिकार है कि आपकी ऐसी शिक्षा मिले यहां कि आप आगे जाकर आगे बढ़े, और खुद का ही नाम नहीं, खुद के मां बाप का ही नही, अपने स्वंय के विद्यालय का ही नही, लेकिन पश्चिम बंगाल और भारत वर्ष का नाम आप आगे करें। वैसे आप में है-कई लोगों के चेहरे पर मैं देख रहा हूँ कि थोड़ा सूरज का धूप आने से भी तेज ज्यादा लगता होगा-लेकिन सबके लिये है कि हरेक के अन्दर वो ताकत है वो ज्योति है कि आप निर्णय करें तो इसको बड़ी ज्यादा उजास सकते है। और इसलिये ऐसी संस्था है कि जिस संस्था को हमें बहुत संभाल के रखना और हमारे शिक्षा मंत्री जी ने जो बात कही कि शिक्षा के क्षेत्र में इस विद्यालय के हारे में भी बड़ी खुशी की बात हैं - हम-दो दिन के बाद कलकत्ता में एक अनुष्ठान हो रहा है। "Education and Human rights' शिक्षा और मानव के मूल अधिकार - उस पर मैं जाने वाले हूँ। कई लोग आने वाले हैं। उसके हम देख रहे है वो आँकड़े- तो अपने देश में ये आंकड़ा सही है ऐसा मैं मानु..... सही न हो तो बहुत अच्छा है कि अगले साल में इसके देखा जायेगा जो तीस करोड़ लोग ऐसे होगे जो निरक्षर है- जो पढ़ना लिखना नही जानते। जब हिन्दुस्तान का बटवारा हुआ था तो पूरी आबादी ३३ करोड़ की थी। और आज हमारे यहां ३० करोड़ निरक्षर हैं। ५० साल से बहुत से बड़े-बड़े योजनाएं बनी-सैंकड़ों करोड़ो रू० खर्चा किया शासन के मारफत जा-जाकर के और वैसे भी और फिर भी स्थिति जो है हमारे जिले में जाकर देखिये- कई ऐसे लोग है बहुत गरीब-आदिवासी—जिनके बच्चों को तालिम नहीं मिलती जिनके स्कूल में तो fee भी नही लगती। ये विद्यालय जब शुरू हुआ तो १५३ विद्यार्थी थे। अब कुछ साढ़े ११ सौ से ज्यादा हैं। कुछ १५ शिक्षक थे उस वक्त- (आज कितने हैं? एक सौ से ऊपर— How many teachers are there ?) चलिए शिक्षक है? और आप इतने ज्यादा विद्यार्थी हो। मां और बाप भी बड़े प्रसन्न होते हैं। इस विद्यालय में जब उनका बेटा पढ़ता है तो ये बहुत ऊंची महत्व की बात है और मुझे बड़े खुशी है। मुखर्जी महोदय ने वहां से कह दिया है कि मैंने एक बहुत जिसको बहुत ऊंचे predecessor—मेरे पहले के गवर्नर जो थे- भारत आजाद होने के बाद दूसरे गवर्नर बने थे डा० काटजु साहब। उनका वक्तव्य भी मैंने पढ़ा जब वे यहां आये थे तब। और उन्होने जब Best all round student—ये बच्चे आप सुनिये ये आपको सुनने की बात है कि आपके लिये ऐसा एक स्वर्ण चन्द्र बनाया जाता था कि डा० काटजू साहब ने announce किया था कि जो सबसे उत्कृष्ट विद्यार्थी इसमें निकले- ये contract में

लिखी हुई है तो उसको वो दिया जाये। १९६२ में चीन के साथ का युद्ध हुआ। उसके बाद ये बन्द हो गया। तो सरकार में कोई चीज चलती है, जरूरत नही हो तो भी चलती ही रहती है और जब बन्द होनी चीहिये तब भी बन्द नही होती और सरकार मे कोई चीज बन्द हो गई तो फिर शुरू नही होती है तो आज मैंने ये नक्की किया है कि आज वो इस साल फिर से स्वर्ण चन्द्र फिर से शुरू कर रहे हैं। आपने ये बात मनवाई—और आप में से सब लड़को को यह तैयारी रखनी चाहिये कि मैं कैसे लूं। मै यहां १० साल, ११ साल अभ्यास करने के बाद—इतने वर्षों के बाद एक व्यक्ति यह सोचे कि मैं उत्कृष्ट क्यो न बनूं – और ये बनना चाहिये। कोई बात नहीं – प्रयत्न किया वो जरूरी है – तो वो चीज होगी। और अब हमें एक दूसरी जगह भी जाना है और उसके बाद भी कुछ कार्यक्रम है– और तान बजकर पच्चीस मिनट पर मुझे हवाई जाहाज से चला जाना है। तो मैं आपसे अब आज्ञा लेता हूँ। लेकिन मेरी शुभ-कामनाएं है – आपके ये विद्यालय और प्रगति करता रहे, ये ऐसे विद्यार्थियों को पैदा करे जो भूतकाल थे उससे भी आगे बढ़ जाये। वैसे कोई नही बन सकेगा सिवा कि England जाकर हो जाओ। लेकिन यहां रहकर हमें बहुत करने की सुविधाएं है – challanges हैं – वो हम करेंगे और आप को, सबको मेरी बहुत शुभ-कामनाएं है– Headmaster आपके Asst Headmaster साहब आठवे आये थे यूनिवर्सिटी में विज्ञान के क्षेत्र चट्टोपाध्याय महोदय। उनको मेरा अभिनन्दन दूसरे एक विद्यार्थी दूसरे नम्बर आये थे Art Humanities में। वैसा अभी हमको फिर से देख है। आपको सबको शुभकामनाएं है। और आपके बीच में आने का जो एक प्रसंग और आप से मिलने का देखने का – इसके बहुत-बहुत धन्यवाद।

The Speech is published in this School Magazine (Special-Issue) with due permission of His Excellency, The Governor of West Bengal, vide No. 6097-G dated 12.11.20001.

D. Barman, WBSES,
Headmaster
Birbhum Zilla School.

SPEECH OF HIS EXCELLENCY, SHRI VIREN J SHAH, THE GOVERNOR OF WEST BENGAL, AT THE INAUGURATION OF 150TH FOUNDATION DAY OF BIRBHUM ZILLA SCHOOL ON 9TH DECEMBER, 2000

All the sitting special guests, officers, guests and respected Headmaster Sir!

First of all I would like to beg pardon for coming late since all of you have come over here at 10'O clock. It never happens so either in Kolkata or anywhere that I reach late. But I came by air. The weather was not clear so it did not take off. All our programme had to be changed and you all had to be in trouble.

In the afternoon we have to go to Engineering College. So I have decided not to take lunch to compensate this late arrival. No lunch for me means no lunch for those who have come with me because we are already late.

We have to go back in the afternoon only. I was to stay overnight here and accordingly to my habit I was to meet the district officers and representatives of local people. Therefore, I'll have to come here again and I shall spend the whole day with you all.

The children enjoy it very much even if they don't understand a single word but they really enjoy clapping don't they ? But do you know what this celebration is for ? You are the students of this very school which has a historical background. It was established in Birbhum (W.B.) during the undivided Bengal. There were schools of this kind at that time also. It was the period of renaissance when changes took place in the field of culture, social, education and political.

This school produced brilliant pupils. As you heard just now that Lord Sinha, who was the first Indian to be the member of the British House of Lords, was the student of this school. Likewise, many chiefs of Justice, IAS, ICS, IPS officers, scientists, renowned doctors, litterateurs, Sanskrit Scholars had passed out from this school. This increases the responsibility of your school as well as your staff.

Generally in Govt. schools "indifference" prevails and somewhere I too have noticed that the teachers come and go on time have their salary and thats all. I believe this does not happen here.

I have requested Principal Sir that with his brilliant team of staff he can mould children with highest excellency as this school has the bright reputation of such students who adored high positions in different fields. Every child has this ability, he has the right to acquire education so that he can not only hold his

name or his parents or his school's name high but of West Bengal and our nation's also. I can well see the bright faces which indicate that they have strong inner self and have inner light too. This is the institution which should be taken care of. I do agree with whatever our Education Minister has said just now.

Recently we will have a seminar on "Education and Human Rights". I, along with many eminent persons will attend the programme. There are some data before me and God forbid they may be true which speak that 30 crore people are still uneducated in our country. At the time of partition the population of our country was 33 crores and now we have 30 crores people uneducated. During 50 years many reports were prepared after extensive studies. Crores of rupees were spent through the Govt. and other sources, still the situation is very grim. Still we have many poor backward classes whose children are not getting education though they don't have to pay the fees.

When this school came into existence, 153 students were studying and now there are more or less 1100 pupils. This school has 40 teachers. When children get chance in this school their parents naturally become happy.

I have read statements of my predecessor Mr. Katju. He had announced that the best student will get a prize named "Swarna Chandra". In 1962 during Indo-China War this prize was stopped and in Govt. if any thing begins it keeps on persisting even if it is not needed and if anything stops it does not start. So I have decided that this award will be started this year again. Every boy should try for this award. He should try to be the first. It only needs hard work and determination.

Now we have to visit other places too. We have some more assignments too and at 3:25 p.m. again I'll have to fly off.

I wish you all and this school my very best so that it can produce excellent boys surpassing their alumni. They may not become 'LORD' lest they settle in England. Still we have plenty of opportunities here to serve, accept challenges here. The school Asstt. Headmaster Sir has secured eighth position in meritlist of science faculty. Similarly another student has secured second position in Humanities faculty. We want you to repeat the same results.

I would like to thank you all again for giving me this opportunity for being with you all.

Thank you very much.

The English Version of the Speech is published in this School Magazine (Special-Issue) with due permission of His Excellency, The Governor of West Bengal, vide No. 6097—G dated 12.11.2001.

D. Barman, WBSES
Headmaster
Birbhum Zilla School